पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरण — मॉड्यूल पाँच — शमूएल की पुस्तक का परिचय

विचार-विमर्श के प्रश्न

1. आपको इस अध्याय में क्या सबसे अच्छा लगा, या आपके विचार से आपने क्या सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी? आपके मन में क्या प्रश्न थे?
2. जब शाऊल परमेश्‍वर से दूर हो गया, तो वह न केवल अपने लिए बल्कि पूरे इस्राएल देश के लिए परेशानियाँ लेकर आया। क्या आप मानते हैं कि आज मसीही अगुवे अपनी सेवकाई में लोगों के साथ जो कुछ भी होता है उसके लिए जवाबदेह हैं? क्यों या क्यों नहीं?
3. शमूएल के लेखक ने आंशिक रूप से अपनी पुस्तक इसलिए लिखी क्योंकि दाऊद के घराने की असफलताओं के कारण इस्राएल के बहुत से लोग परमेश्‍वर की प्रतिज्ञाओं पर संदेह करने लगे थे। आज लोगों को परमेश्‍वर की प्रतिज्ञाओं पर क्यों शक होता है?
4. शमूएल के दिनों में, कई इस्राएली परमेश्‍वर के बजाय किसी और पर आशा रखने की परीक्षा में पड़े। आज आप मसीहियों को मसीह में अपनी आशा को दृढ़ता से थामे रहने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं?
5. क्योंकि मसीह ने नई वाचा की प्रत्येक माँग को पूरा कर दिया है, तो क्या हमें अब भी ईश्वरीय वाचाओं में निर्धारित मानवीय विश्वासयोग्यता की शर्तों को पूरा करना जरूरी है? क्यों या क्यों नहीं? अपने उत्तर का समर्थन बाइबल के संदर्भों से करें।
6. क्या आप कभी-कभी लोगों के हृदय को देखने के बजाय उनके बाहरी रूप को देखने की शमूएल जैसी गलती करते हैं? क्या आप उदाहरण दे सकते हैं कि कई बार ऐसा कैसे होता है? हम इस समस्या से कैसे बच सकते हैं?
7. यह जानना कि दाऊद के पापों के बावजूद परमेश्वर ने उसके जीवन में कैसे अनुग्रहपूर्वक अपना प्रेम और आशीषें उंडेलना जारी रखा, आपके जीवन और परमेश्वर के प्रति आपके दृष्टिकोण को किस प्रकार बदल देता है?
8. क्या आपको कभी किसी पाप के लिए क्षमा को महसूस करने में कठिनाई हुई है? दाऊद की कहानी आपको क्षमा को महसूस करने का कैसे एहसास दिलाती है? क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसे क्षमा महसूस करने का एहसास पाने में संघर्ष करना पड़ा है? आप उस व्यक्ति से क्या कह सकते हैं?
9. आपके विचार से हमारी विश्वासयोग्यता परमेश्‍वर की आशीषों से कैसे संबंधित है? क्या उसकी आशीष हमेशा हमारी विश्वासयोग्यता पर निर्भर होती है? जब हम अविश्वासयोग्य होते हैं, तो क्या वह हमें वैसा देता है जिसके हम वास्तव में हक़दार हैं? हमारे पाप परमेश्‍वर के साथ हमारे संबंध को कैसे प्रभावित करते हैं?

**समीक्षा कथन :** शमूएल के लेखक और उसके पाठकों को विश्वास के एक बड़े संकट का सामना करना पड़ा। एक ओर, परमेश्वर ने दाऊद और उसके घराने को इस्राएल पर स्थाई राजवंश के रूप में स्थापित किया था जो उनकी परमेश्वर के राज्य को पूरे संसार में फैलाने के उनके परमेश्वर द्वारा दिए गए उद्देश्य को पूरा करने में अगुवाई करेगा। दूसरी ओर, दाऊद के घराने की असफलताएँ परमेश्‍वर के लोगों के लिए बड़ी परेशानियाँ लेकर आईं।

**विषय का अध्ययन : 1**  परमेश्‍वर ने प्रतिज्ञा की थी कि दाऊद का एक पुत्र सदा-सर्वदा राज्य करेगा। वह पुत्र यीशु था, जो अब अपनी कलीसिया के द्वारा शासन करता है। यीशु अब संसार का मानवीय शासक है, और वह आम तौर पर अपनी कलीसिया के द्वारा शासन करता है।

**विषय का अध्ययन : 2**  एक समय में, एलेजांद्रो एक धार्मिक व्यक्ति था और वह नियमित रूप से कलीसिया जाता था। परंतु कलीसिया के सदस्यों से उसका मोहभंग हो गया। उसने कई अलग-अलग कलीसियाओं में जाकर पाया कि उनके जीवन में भी उसी के समान समस्याएँ थीं। उन्होंने भी उसके समान गलत रीति से कार्य किए थे। इसलिए उसने कलीसिया जाना छोड़ दिया, लेकिन उसने बल दिया कि वह अब भी “आत्मिक” है।

**विषय का अध्ययन : 3** ज़ुआनिटा को ऐसी कलीसियाओं में जाना पसंद था जो परमेश्‍वर के वचन की सच्चाई पर विश्वास करती हों। परंतु वह बार-बार कलीसिया बदलती रही क्योंकि वह जिस भी कलीसिया में जाती थी, वहाँ उसे एक या अधिक समस्याएँ मिलती ही थीं।

**विषय का अध्ययन : 4**  जैमी का दावा था कि वह मसीही है और आत्मिकता उसके लिए महत्वपूर्ण थी। उसे संस्थागत कलीसिया बिल्कुल पसंद नहीं थी। रविवार को वह कलीसिया जाने के बजाय घर पर या कहीं और पॉडकास्ट सुन लेता था।

मनन के प्रश्न :

1. पुराने नियम के दाऊद के वंश और नए नियम की कलीसिया के बीच के संबंध पर चर्चा करें।
2. क्या आप कभी एलेजांद्रो जैसे किसी व्यक्ति से मिले हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
3. क्या आपने कभी एलेजांद्रो जैसा महसूस किया है? उदाहरण सहित समझाइए।
4. क्या आप कभी जुआनिटा जैसे किसी व्यक्ति से मिले हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
5. क्या आपने कभी जुआनिटा की तरह महसूस किया है — कलीसिया की खामियों के कारण उसे छोड़ देने जैसा? उदाहरण सहित समझाइए।
6. यद्यपि कोई कलीसिया सिद्ध नहीं है, फिर भी कुछ कलीसियाएँ सत्य से दूर हो गई हैं, हालाँकि वे अब भी बाइबल का प्रयोग करती हैं। अपने अनुभव के आधार पर आप कैसे अंतर बता सकते हैं? उदाहरण दीजिए।
7. क्या आपका कभी जैमी जैसे किसी व्यक्ति से परिचय हुआ है? उदाहरण सहित समझाइए।
8. क्या आपने कभी जैमी जैसा महसूस किया है? उदाहरण सहित समझाइए।

दिए जानेवाले कार्य :

1. कुछ ऐसे लोगों से बात करें जो आत्मिक होने का दावा तो करते हैं लेकिन कलीसिया नहीं जाते। उनके दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करें। आकर अपने सामुदायिक समूह को विवरण दें।
2. परमेश्वर के राज्य के साधन और प्रतिनिधि के रूप में कलीसिया के महत्व पर 10 मिनट का संदेश तैयार करें, भले ही कलीसिया असिद्ध है। किसी समूह में संदेश प्रस्तुत करें और उनकी प्रतिक्रिया लें। बातचीत को अधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रतिक्रिया का प्रयोग करें।